© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

अर्वाचीन संस्कृत नाटकों में महिलाओं का योगदान

डॉ0 अरूण कुमार त्रिपाठी
तिघरा, नगहरा, बस्ती, यूपी

संस्कृत साहित्य में कवियों की भाँति कवित्रियों की भी एक सुदीर्घ परम्परा रही है। महिलाएँ अति प्राचीन काल से ही गद्य, पद्य, चम्पू, कला एवं नाट्यादि की सर्जना में अपना योगदान देती रही हैं। वैदिक काल में घोषा, अपाला, गोधा, विश्ववारा, सूर्या, सावित्री, वागाम्भृणी, लोपामुद्रा, रोशमा, उर्वशी आदि अनेक ऋषिकाओं ने मन्त्रों का दर्शन किया था। बौद्धकाल में उत्पलवर्णा, वसिष्ठी, आम्रपाली आदि सैंतीस स्थविराओं की कवित्वपूर्ण सरस काव्य रचनाएँ व जीवन गाथाएं 'खुद्दक निकाय' नामक ग्रन्थ में संग्रहीत हैं। लैकिक संस्कृत साहित्य में भी विज्जका, मारूला, विकट नितम्बा, शीलाभट्टारिका, अवन्तिसुन्दरी, गंगादेवी, रामभद्राम्बा, तिरूमलाम्बा, विश्वासदेवी, बीनाबाई, वैजयन्ती आदि कवित्रियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

आधुनिक संस्कृत महिला रचनाकारों में शारदादेवी की रामाभ्युदय, त्रिवेणी की रंगाभ्युदयम्, सम्वतकुमारविजयम्, रंगराटुसमुदयम्, तत्वमुद्रा भद्रोद्रयम, श्री देवी कुट्टितम्बूराटी का नाट्यविलास; डॉ0 मणिक पाटिल का कालादानम् डॉ0 रमा चौधुरी के 24 रूपकों जिसमें यतीन्द्र–यतीन्द्रम, शंकरशंकरम्, देशदीपम्, पल्लीकमलम्, कविकुलकोकिलम्, मेघमेदुरमेदनीयम्, निवेदित–निवेदितम्, रसमयरासमणिः, नगरनूपुरम्, संसारामृतम्, रामचरितमानसम्, प्रसन्न प्रसादम्, श्रीमती लीलारावदयाल की क्षमाचरितम्, नाट्यचन्द्रिका, श्रीमती कमलारत्नम् की होलिकोत्सवम्, मिथ्याग्रहणम्, क्षणिकविभ्रमः, डॉ0 वनमाला की पार्वतीपरमेश्वरीयम्, अन्नदेवता; देवकी मेनन का कुलेचवृत्तम्, सैरन्ध्रीप्रेक्षणकम्, डॉ0 रत्नमयी देवी दीक्षित की केरली साहित्य दर्शनम्, डॉ0 वीणापाणि की मधुराम्लम्, निम्वपत्राणि, डॉ0 नलिनी शुक्ला की प्रकीर्णम्, भावांजलि, डॉ0 मिथिलेश कुमारी मिश्र का कीचक वध, अम्रपाली आदि सहित अनेक संस्कृत कवित्रियाँ एवं उनके रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन सभी आधुनिक कवित्रियों का योगदान संस्कृत जगत के लिए उल्लेखनीय है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में डॉ0 रमा चौधुरी का विशिष्ट स्थान है। 1912 में कलकत्ता में इनका जन्म हुआ था। इन्होंने 1943 में अपने पति के सहयोग से कलकत्ता में संस्कृत शोध संस्थान 'प्राच्यवाणी' की स्थापना की। संस्कृत भाषा में आप के 25 रूपकों का प्रणयन किया है। ये सभी रूपक प्राच्यवाणी संस्था कलकत्ता से प्रकाशित हो चुके हैं। 'यतीन्द्र–यतीन्द्रम' आपका पहला नाटक है। इनके 'शंकरशंकरम्' नाटक

में चौदह दृश्य हैं। इस नाटक में शंकराचार्य का जीवन चरित्र तथा उनके द्वारा वेदान्त के प्रसार के लिए किये गये प्रयासों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'देशदीपम्' के आठ दृश्यों में बंगाल के ग्रामीण परिवार के युवक चम्पक वदन का देश के लिए आत्मोत्सर्ग करने की घटना प्रस्तुत है। 'पल्लीकमलम्' नौ दृश्यों का रूपक है। इनमें नायिका कमलकलिका तथा नायक रूप कुमार के प्रेम व विवाह की कथा पूर्णतः उतार–चढ़ाव के साथ प्रदर्शित की गई है। 'कविकुलकोकिलम्' में महाकवि कालिदास के जीवन की चारूचरितावली को दस दृश्यों में प्रस्तुत किया गया है। 'मेघमेदुरमेदनीयम्' नाटक में मेघदूत की कथा के पूर्व की घटना विस्तार से प्रस्तुत है और बाद में नायक और नायिका का विमुक्त होना, नायक द्वारा मेघ से सन्देश भेजना तथा यक्ष–यक्षिणी के मिलन का प्रसंग संक्षेप में उपस्थापित किया गया है। 'कविकुलकमलम्' कालिदास की उत्तरकालीनः जीवन गाथा को आठ दृश्यों में प्रस्तुत किया है।[1] 'नगरनूपुरम्' में मेखला नामक अपूर्व सुन्दरी गणिका के भोग एवं ऐश्वर्य सम्पन्न जीवन को तथा अन्त में सन्यासिनी बनने की घटना को दस दृश्यों में निबद्ध किया है। इनकी रचना 'रसमयरासमणिः' में आठ दृश्य हैं, इसमें विधवा रानी रासमणि के आदर्श कार्य एवं महासमाधि की घटना प्रमुख है। 'संसारामृतम्' के सात दृश्यों में केलिनामक दरिद्रपरिवार की कन्या पर आई विपत्तियों की कथा है।[2] श्रीमती लीलाराव ने चौबीस लघु रूपकों का प्रणयन किया है इनमें अधिकांश रूपकों की कथावस्तु का आधार पण्डित क्षमाराव विरचित काव्य–कथाएँ हैं। इतिवृत्त के स्रोत की दृष्टि से इनकी कथाओं को तीन भागों में बाटा जा सकता है। प्रथम वर्ग की कथायें उत्पाद्य कोटि की है। इनमें व्यक्ति एवं समाज के दोषों की ओर संकेत किया गया है। श्रीमती लीलाराव की 'अनूपः' नामक एकांकी तीन दृश्यों में विभक्त है। प्रथम दृव्य में अनूप का मित्र गुणे मीरा को उसके पति के पास ले जाने आता है। मीरा उसे नर्तकी के साथ भागा हुआ विचार कर खिन्न है। गुणे जब अनूप को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अनेक तर्क प्रस्तुत करता है तो मीरा साथ चलने को तैयार हो जाती है। मीरा को सर्वाधिक दुःख इस बात का है कि बच्चों तथा पत्नी की अपार स्नेह करने वाला अनूप अचानक ही परित्याग करके चला गया।

अभिनय की दृष्टि से लीलाराव ने यहाँ कुछ परिवर्तन किया है। मूलकथा में रेलयान में मीरा अनूप को स्वप्न में देख कर घबरा जाती है। यहाँ मूल कथा में परिवर्तन हुआ है।[3] उक्त घटना लीलाराव ने स्वप्न के माध्यम से न करके मीरा और गुणे के वार्तालाप के द्वारा किया है।[4] इसी दृष्य में मीरा के साथ वार्तालाप के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है जबकि मूलकथा में यह मीरा का चिन्तन है।[5] असूयिनी निरपत्यता की समस्या को लेकर लिखी गयी है। इसका चार दृष्यों में मंचन किया गया है।[6] कपोतालयः श्री जगदीश चन्द्र माथुर द्वारा रचित 'कबूतरखाना' का दो दृव्यों में किया गया नाट्य रूपांतर है।[7] इनकी 'मायाजालम्' एकांकी में मुग्धा पिता द्वारा वाग्दान के उपरान्त अपने भावी पति से उपवन में गुप्त रूप से मिलती रही। पिता ने

उस युवक को उच्च शिक्षा के लिए पेरिस भेजा जिसने पहले तो पत्राचार किया परन्तु बाद में धीरे–धीरे पत्राचार बन्द कर दिया और वह आज तक उसकी प्रतीक्षा कर रही है।[8] इसमें मन्दा अल्पशिक्षिता व कुरूप है। उसके बड़े भाई का एक मित्र बिना देखे ही उससे विवाह को तैयार हो जाता है। विवाहोपरान्त पिता के अस्वश्थ्यता का बहाना करके आज तक नहीं आया। अन्य पात्र मोहनी विवाह के पश्चात् पति के साथ पेरिस जाती है। वहीं वह एक होटल में उसे छोड़कर चला जाता है। एक भारतीय भोजन का बिल चुका कर उस पर कृपा करता है। पति के व्यवहार से खिन्न वह उस युवक के साथ भाग जाती है। बाद में वह युवक भी उसे कनाडा में छोड़ देता है। इसकी चौथी पात्र दया एक गणिका पुत्री है। वेश्यालय से भाग जाने के बाद उसे पुरोहित ने पाला। पुरोहित की मृत्यु हो जाने के बाद वह समुद्र के किनारे एक मुर्छित युवक को लाकर उसकी सेवा करती है। बाद में वह उस पर अनुरक्त हो जाती है एक दिन वह भी इसको छोड़ कर चला जाता है। अन्त में एक दिन वह ज्योतिष के वक्तव्य से पता चलता है कि उन चारों का गुनहगार एक ही व्यक्ति है। इस कथानक से स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक कालीन संस्कृत महिला रचनाकारों ने महिला के दुःखों एवं शोषणों का किस प्रकार वर्णन किया है।

श्रीमती कमलारत्नम् ने पाँच लघु रूपकों का प्रणयन कियां 'गणप◈छागः प्रतीकात्मक कल्पित नाट्य है तथा साक्षरता के महत्त्व से सम्बन्ध रखता है। विवेकानन्द स्मृति तथा विवेकानन्द जीवनम् विवेकानन्द के जीवन से सम्बन्धित है। 'विवेकानन्द विजयम्' का उपजीव्य प्रो0 श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा लिखित महानाटक 'विवेकानन्दविजयम्'[9] ही है। 'नचिकेतोमय–संवादम्' की कथावस्तु भी प्रख्यात कोटि की है तथा इसका उपजीव्य कठोपनिषद है।[10] 'विक्रमवेताल– –नाटिका' की कथावस्तु भी लोककथा परक है। इसका आधार सोमदेवकृत कथा सरित्सागर ही है।

डॉ0 वनमाला भवालकर ने पाँच नाट्य कृतियों का प्रणयन किया है। जिनमें 'पापदण्डः' भावनात्मक सामाजिक सम्बन्धों पर आधारित उत्पाद्य कोटि का रूपक है। पार्वती परमेश्वरीयम् कथावस्तु के स्रोत की दृष्टि से पौराणिक वर्ग का रूपक है। परन्तु इसमें अपनी उपजीव्य कुमारसम्भवम् को बनाया है।[12] रामवनगमनम् तथा सीताहरणम् की कथावस्तु प्रख्यात कोटि की है तथा इसका ग्रहण वाल्मीकि रामायण से किया गया है।[13] अन्नदेवता की कथावस्तु उत्पाद्य कोटि की है।

श्रीमती देवकी मेनन ने चार नाट्य कृतियों का प्रणयन किया है। कालिदर्शनम् में रामकृष्ण परमहंस की सहधर्मचारिणी श्री शारदा देवी के जीवन का वर्णन किया गया है। सैरन्ध्री प्रेक्षणकम् में कुब्जी सैरन्ध्री और उसकी प्रिय सखी सुशीला की कृष्ण भक्ति का वर्णन है। कुचेलवृत्तम् में कृष्ण–सुदामा का नाट्य वर्णन है।

डॉ0 वीणापाणि पाटनी रचित मधुराम्लम् में पाँच रूपक हैं। निम्बपत्राणि में विद्याध्ययन की समाप्ति के पश्चात् मार्ग में अशुद्धि के कारण घृत युक्त चावल त्याग देने के कारण आयुर्वेद में वर्णित शुद्ध पदार्थ नीम पत्ते का भोजन करने की कथा का वर्णन है। प्रतिबुद्धा में एक कामकाजी महिला की नौकरी तथा घर में सामंजस्य न बैठापाने का वर्णन है।

श्रीमती नलिनी शुक्ला के राधानुनयः में श्री कृष्ण एव राधा के लीला का वर्णन नाट्य रूपांतर में किया गया है। यद्यपि कि इस कथा का उपजीव्य श्रीमद् भागवत कथा है परन्तु वर्णन की दृष्टि से प्रतीत होता है कि इस कथा का उपजीव्य जयदेव का गीतगोविन्द है। इसमें बसन्त ऋतु का वर्णन होने के कारण इसकी पुष्टि हो जाती है।

डॉ0 मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने एक नाटिका एवं दस एकांकियों की सर्जना की है। आम्रपाली पाँच अंकों की नाटिका है। नाट्यकर्ती ने इसका उपजीव्य रामवृक्ष वेनीपुरी के हिन्दी नाटक 'अम्बपाली' को बनाया गया है। यद्यपि नाट्यकर्ती ने इतिहास के विरूद्ध आम्रपाली का अजातशत्रु से प्रेम दिखाया है किन्तु अम्बपाली नाटक में भी ऐसा ही वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार आम्रपाली का अजातशतु के पिता बिम्बिसार से प्रेम था।[14] इनके एकांकियों में ज्ञानेनहीनः पशुभिः समानाः, न मुनिः पुनरायातो न चासौ वर्धते गिरिः, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथित्या, दशमस्त्वमसि परशुरामप्रतिज्ञा प्रमुख हैं।

आज के समाज में व्याप्त समस्याओं में प्रमुख दहेज प्रथा को लेकर कुमारी निर्मला द्वारा रचित 'यातुकं पातकं परम्' की कथावस्तु उत्पाद्य है जिसमें दो दृश्य हैं। प्रथम दृश्य में दहेज के लोभी क्षेमकरण एवं सरला अपने अभियन्ता पुत्र का विवाह धनाढ्य अशोक की पुत्री से निश्चित करते हैं। द्वितीय दृश्य में निश्चित समय पर तीनों लड़की देखने जाते हैं। सम्बन्ध निश्चत करने के रूप में इक्कीस हजार नगद तथा विवाह के समय टी0वी0, फ्रिज, कूलर, गांड़ी आदि की माँग करते हैं। अशोक जो कि गुप्तचर विभाग का अधिकारी है गुप्त रूप से रिकार्ड कर लेता है तथा पैसा लेते समय फोटो खींच लेता है। क्षेमकरण द्वारा पूर्व में पुत्र वधू की हत्या की स्वीकृति लेने पर पूर्व साक्ष्य देकर अपना परिचय देकर उन तीनों को बन्दी बना लेता है। यह नाटक समाज से दहेज लोभियों को सबक सिखाने की सीख देता है।

आधुनिक साहित्यों में नारी एक ओर आदर्श रूप में चित्रित हुई है, दूसरी ओर उसकी उच्छृंखलता का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। वह राष्ट्र प्रेमिका भी है और विलासी भी। श्रीमती रमा चौधरी विरचित कविकुलकोकिलम् में राजकन्या विद्यावती कमला देवी का चरित्र प्रधान है। यह रूपषी एवं ज्ञानगर्विता है।[15] शास्त्रार्थ में इसने स्वयं से विवाह के इच्छुक अनेक कुमारों को पराजित एवं अपमानित किया है। परन्तु नारी सुलभ कोमलता उसमें भी विद्यमान है। पति को अपमानित करने के पश्चात् पश्चात्ताप करती है तथा कालिदास के वापस आने पर क्षमा याचना भी करती है।[16]

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि बीसवीं शताब्दी के महिला लेखिकाओं की रचनाओं में स्त्री मनोविज्ञान ही नहीं अपितु सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक परिवेश का आकलन प्राप्त होता है। इसीलिए इस युग की महिला रचनाकार पुरूष रचनाकारों की तरह अपनी लेखनी को चलाने में कोई संकोच नहीं करती तथा निर्भीक होकर रचना करती है। इसलिए आधुनिक संस्कृत साहित्य में महिलाओं का अद्वितीय योगदान है। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में स्त्री लेखन पुरूषवादी आलोचना की परवाह किये बिना अपनी राह पर मजबूती से बढ़ रहा है। स्त्री में शरीर बल भले न्यून हो मनोबल व आत्मबल की कमी नहीं है।

सन्दर्भ

1. आधुनिक संस्कृत महिला नाटककार – डॉ0 मीरा द्विवेदी, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृ0–6
2. वही – पृ0 –7
3. अनूप :– द्वित्यज्योतिः–पृ0–13–15
4. आत्मनिर्वासनम् – कथामुक्तावली, पृ0–118
5. अनूप :– दिव्यज्योति, पृ0–13–15
6. असूयिनी– कथापंचकम् पृ0–67–86
7. कपोतालयः – मंजूषा, जून 1956, पृ0–232
8. मायाजालम् – श्रीमती लीलाराव
9. प्राचार्या श्रीमती कमलारत्नम्महोदयाभिः आकाशवाणी दिल्लीकृते रूपान्तरितं श्रीधरभास्करवर्णेकरलिखितं नाटकं विवेकानन्दविजयम्। –पारिजातम्, जुलाई 1986, पृ0–27
10. कठोपनिषद्, प्रथम एवं द्वितीय अध्याय
11. कथासरित्सागर – 8 से 36 तरंग
12. कालिदास कुमारसम्भवमत्रकुलम् – पार्वती परमेश्वरीयम् की प्रवेशिका
13. वाल्मीकिरामायणम् – 2/7–40 सर्ग
14. वैशाली की गणिका – इतिहास साक्षी है, पृ0–80
15. जहांगीर नेदं हिन्दुस्तानम्। इदं भारतवर्षम् ..... अत्रास्ति सर्वेषां समानाधिकारो जाति धर्मवर्ण निर्विशेषेण – देशदीपम, पृ0–45
16. पंकजनयना– श्रद्धेयपितरौ। समोप्ता खलु मम् शुश्रुषाविद्याशिक्षा। अधुनाहं शुश्रुषाकारिणी पद्वाच्या..... ।–वही पृ0 –30